राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–pr.rajbhavan@gmail.com
मो॰–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

शिक्षा, ज्ञान और सांस्कृतिक अभ्युदय के बल पर ही भारत पुनः 'जगद्गुरू' बन सकता है–राज्यपाल

पटना, 25 अगस्त 2018

''आज देश नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है। विश्व भारतीय नेतृत्व की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। इंग्लैंड को पीछे छोड़ भारतीय अर्थव्यवस्था ने विश्व में चौथा स्थान बना लिया है। मंगल जैसे ग्रह को भी भारतीय प्रतिभा ने स्वदेशी यान से अपनी परिधि में समेट लिया है। यह अंतरिक्ष का मंगल जनता के मंगल में परिवर्तित होना चाहिए। इसे सम्भव बनाने का सामर्थ्य युवाओं में ही है, जो आज ऊर्जा से परिपूर्ण, शक्ति से सम्पन्न और कल्पनाओं से युक्त हैं।'' –उक्त उद्‌गार, महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री लाल जी टंडन ने पटना विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के समापन–समारोह में अपने अध्यक्षीय संबोधन के दौरान व्यक्त किये।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार ज्ञान की भूमि है। यह जगत्‌जननी माता जानकी, भगवान बुद्ध, स्वामी महावीर और दशमेश गुरू गोबिन्द सिंह जी की जन्मभूमि और कर्मभूमि है। सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त, चाणक्य, देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, जननायक कर्पूरी ठाकुर आदि इसी धरती के रत्न हैं। विश्व के प्रथम गणराज्य वैशाली की प्रणम्य भूमि भी बिहार ही है।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि बिहार को पुनः शिक्षा के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में विकसित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में गौरवशाली नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है, जिसके संचालन में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार सहित विश्व के कई देशों का सहयोग मिल रहा है। हमें पटना विश्वविद्यालय को भी आधुनिक शिक्षा के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए हर संभव प्रयत्न करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सहस्त्राब्दियों पूर्व भारत जिस तरह शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में पूरी दुनियाँ को रोशनी दिखाते हुए अपना मार्ग–दर्शन प्रदान कर रहा था, उसी गरिमा को आज पुनः हासिल करने की जरूरत है।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में शैक्षणिक विकास में शिक्षकों एवं छात्रों की समन्वित सहभागिता हो, साथ ही विश्वविद्यालय समाज के प्रति भी जवाबदेह हों और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के माध्यम से समाज में संरचनात्मक परिवर्तन हो –यह विश्वविद्यालयों की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य में उच्च शिक्षा के विकास हेतु तेजी से प्रयास हो रहे हैं। श्री टंडन ने आश्वस्त किया कि इन प्रयासों को और गति दी जाएगी। राज्य सरकार और राजभवन –दोनों केन्द्र सरकार के सहयोग से समन्वयपूर्वक उच्च शिक्षा के विकास हेतु हर संभव प्रयास करेंगे।

राज्यपाल ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद, देश में गुणवत्तापूर्ण और नैतिक मूल्यों पर आधारित उच्च शिक्षा के विकास के अभाव में सामाजिक विषमता और वैचारिक भटकाव की स्थिति बन गई थी, जिसकी वजह से अनेक तरह के अपराधों और अनैतिक कार्य बढ़ चले थे। फलतः संस्कारों के समुचित विकास नहीं हो पाने की वजह से महिलाओं के प्रति सम्मान–भावना में कमी आई। जबकि भारतीय संस्कृति सदैव नारी–सम्मान के प्रति सजगता की प्रेरणा देती रही है। स्थितियों में हाल के वर्षों में सुधार नजर आ रहा है। उन्होंने कहा कि वस्तुतः सामाजिक अराजकता और अपराध–भावना से उबरने में शिक्षा की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा से ही हमारे संस्कारों का परिमार्जन होगा। हमारी नैतिकता और संवेदनशीलता विकसित होगी। शिक्षा, ज्ञान और सांस्कृतिक अभ्युदय के बल पर ही हम पुनः 'जगद्गुरू' बन सकते हैं।

लगातार पृष्ठ...2 पर

अपने संबोधन के दौरान, राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि बिहार के राज्यपाल के रूप में शपथ–ग्रहण के बाद आज मेरा यह प्रथम सार्वजनिक कार्यक्रम है। मेरे लिए यह सुखद संयोग और सौभाग्य की बात है कि अपने प्रथम सम्बोधन के लिए मुझे पटना विश्वविद्यालय जैसे ऐतिहासिक और गौरवशाली विश्वविद्यालय के इतने महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में शामिल होने का सुअवसर मिला है। पटना विश्वविद्यालय ने विगत एक सौ वर्षों में बिहार एवं इस देश को एक नई दिशा और दृष्टि देने का काम किया है। राज्यपाल ने कहा कि प्राचीन बिहार में स्थित नालंदा तथा विक्रमशिला विश्वविद्यालय विश्व को वर्षों तक शिक्षा का सन्देश देते रहे हैं। आधुनिक काल में यही कार्य पटना विश्वविद्यालय के द्वारा किया जाता रहा है। ''पूरब का ऑक्सफ़ोर्ड'' कहा जाने वाला बिहार का यह विश्वविद्यालय भारतीय उपमहादीप का आठवाँ पुराना विश्वविद्यालय रहा है, जिसने न केवल बिहार बल्कि उड़ीसा, नेपाल तथा झारखण्ड–राज्य के शैक्षणिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों को सँवारने के साथ–साथ, राष्ट्र के निर्माण तथा समृद्धि में अपनी अहम् जिम्मेवारी निभायी है।

राज्यपाल ने कहा कि हरेक युवा एक अच्छा इन्सान बनकर अपने जीवन की सही सार्थकता प्रमाणित कर सकता है। इस क्रम में पूर्व प्रधानमंत्री स्व॰ अटल जी की कविता को भी उन्होंने उद्धृत किया– ''धरती को बौनों की नहीं/ ऊँचे कद के इंसानों की जरूरत है/ इतने ऊँचे कि आसमान छू लें/ नये नक्षत्रों में प्रतिभा के बीज बो लें/ किन्तु इतने ऊँचे भी नहीं/ कि पाँवों तले दूब ही न जमे/कोई काँटा न चुभे/ कोई कली न खिले।''

राज्यपाल ने अपने संबोधन के अंत में एक तेजस्वी, यशस्वी और समृद्ध भारतवर्ष के नवनिर्माण हेतु दृढ़संकल्पित होने का आह्वान करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री स्व॰ अटल जी की ही पंक्तियों को माध्यम बनाया– ''जब तक ध्येय न पूरा होगा/ तब तक पग की गति न रूकेगी/ आज कहे चाहे जो दुनिया/कल को बिना झुके न रूकेगी।''

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर ने पटना विश्वविद्यालय के साथ–साथ, बिहार में उच्च शिक्षा के समग्र विकास में अपने मंत्रालय की तरफ से हरसंभव सहयोग करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि आज केन्द्र सरकार मानव सम्पदा के बहुमुखी विकास के लिए पूर्ण तत्पर है। आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न आयामों को विकसित करने के साथ–साथ शोध एवं अनुसंधान को सही दिशा और गुणवत्तापूर्ण बनाये रखने के लिए समेकित प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने उच्च शिक्षा के विकास हेतु केन्द्र सरकार की विभिन्न परियोजनाओं के तहत समुचित बजटीय प्रावधानों का उल्लेख करते हुए कहा कि बिहार में भी उच्च शिक्षा के विकास को सार्थक दिशा प्रदान की जाएगी।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि 'स्टूडेन्ट क्रेडिट कार्ड योजना' के तहत सुगमतापूर्वक छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए राज्य सरकार अल्प ब्याज–दर पर ऋण उपलब्ध करा रही है। राज्य में नवस्थापित –पाटलिपुत्र, मुंगेर एवं पूर्णिया विश्वविद्यालयों में आधारभूत संरचना विकसित करने की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार के कार्यकाल में पर्याप्त रूप में शिक्षा के लिए राशि आबंटित की जा रही है। उन्होंने कहा कि बिहार के लगभग आधे दर्जन मुख्यमंत्री पटना विश्वविद्यालय के विद्यार्थी रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं भी इस ऐतिहासिक विश्वविद्यालय का छात्र होने के नाते आज अत्यन्त गौरवान्वित हूँ।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्य के शिक्षा मंत्री श्री कृष्णनन्दन प्रसाद वर्मा ने उच्च शिक्षा के विकास हेतु राज्य सरकार के प्रयासों का व्यापक रूप से उल्लेख किया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ रासबिहारी प्रसाद सिंह ने स्वागत–भाषण करते हुए पटना विश्वविद्यालय की सौ वर्षों की उपलब्धि–यात्रा का विस्तार से वर्णन किया।

कार्यक्रम में पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपतियों को भी राज्यपाल ने सम्मानित किया। राज्यपाल एवं केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने पटना विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष की 'स्मारिका' तथा संबंधित 'डाक–टिकटों' की पुस्तिका को भी लोकर्पित किया। कार्यक्रम में धन्यवाद–ज्ञापन पटना विश्वविद्यालय की प्रतिकुलपति डॉ॰ डॉली सिन्हा ने किया।

.....